ग़ज़ल

तर्ज़ – अगर क़िस्मत ... ...

मुहब्बत इस दुनिया की न तेरे काम आएगी।
जहां तक हो सका दुनिया तुझे धोखा दिलाएगी।।

तू इसके ऐश –ो –इशरत में भुलाया यादे हक़ को है।
बता दे चीज़ वो क्या है जो तेरे साथ जाएगी।।

ज़रा हस्ती को अपनी देख गर बंदा कहलाता है।
तो हरदम याद कर हक़ को तुझे बंदा बनाएगी।।

ख़्याले ख़ाम में क्योंकर वक़्त अपना गंवाता है।
हवस दुनिया की ऐ नादां तुझे नुकसान पहुँचाएगी ।।

तलाशे यार में "दासा" छोड़ दुनिया की यारी को।
लगन लागी हुई तुझको पिया अपना मिलाएगी।।

सत्गुरु दरबार के वोह सब ज़माने याद हैं।
वक़्त दर्शन के भजन और गीत गाने याद हैं।। टेक।।

जिसने पाया दर्श वोह तस्वीर – ए – हैरत बन गया।
जाम वहदत के हमें शीरीं पैमाने याद हैं।।

बेमिसल दरबार की तारीफ़ हो क्यों कर ब्यां।
चंद दिलकश और मनोहर वो तराने याद हैं।

मंज़िल राहे हक़ीक़त का इल्म हम को दिया।
बातरीं मख़्फ़ी हक़ीक़त के निशाने याद हैं।।

तेरी कृपा के शब्द के सार से ऐ सत्गुरु।
लूटने वाले जो रहज़न वो बेगान याद हैं।।

अलिफ़ का नक़्शा बनाकर नाम से आगाह किया।
नाम के बदले हमें ये सिर कटाने याद हैं।।

तेरी कृपा का गुरु जी पार पा सकता है कौन।
तेरे जीवन के मुबारिक कुछ अफ़साने याद हैं।।

आबरू बेसहारों की आज रखना ।
नंगली वाले गरीबों की लाज रखना।।

न लिया है न ज़माने का सहारा लेंगे।।
मौत के मुँह में भी हम नाम तुम्हारा लेंगे।।
अपने ग़म खारो को मिटने से बचाओ बाबा।
हम गुनहगारों को कमली में छुपाओ बाबा।।

वक्त इमदाद का है सहारा तो दो।।
अपनी नज़रे करम का इशारा तो दो।
कश्ती डूब चली है किनारा तो दो।
मुझको अपना बना के महाराज रखना, नंगली ... ...

तेरे दर को न छोड़ूंगा हरगिज़ कभी।
बातें करते है करने दो करते सभी।।
आबरू ही मेरी आपको है जभी।
हर वक्त मुझको अपना मोहताज़ रखना , नंगली ... ...

आगे औरो के दामन फैलाया नहीं।
मुझको तुझसा और कोई भाया नहीं ।।
तुझसे क्या कुछ भला मैंने पाया नहीं।
हाथ सर पर गरीब नवाज़ रखना, नंगली ... ...

" दास " देखे सिर्फ़ आपकी जात को ।
और न देखे कभी दुनिया नापाक को।।
सर पर रखूँ सदा तेरी पा ख़ाक को ।

यहीं दाता जी सर मेरे तरस रखना, नंगली ... ...

मुहब्बत लोग कहते हैं जो हम भी प्यार कर बैठे।
न जाने कौन सी नख़वत से वो इंकार कर बैठे।।

ग़रज़ बातों ही बातों में कुछ हो गई मुहब्बत।
रही चुप – चाप दो आंखें बातें हज़ार कर बैठे।।

न जाने कौन से लोगों में मुहब्बत मेरी का चर्चा ।
मगर हम करके बिस्मिल्ला ही वोह दीदार कर बैठे।।

आंखें तो सिरफ़ थीं चार और बातें हज़ारों थीं।
सिरफ़ इन चार आंखों में ईशारा "सार" कर बैठे।।

हमारी आरजू – ए– दीदा– ए– पुरनम निकल जाए।
भरोसा किसको है क्या जाने दम किस दम निकल जाए।।

तसव्वर में हमेशा ही तेरा दीदार हो भगवन।
फिर उसके बाद दम रहे या दम निकल जाए।।

हमारे दिल से भगवन फिक्र – ो –रंज– ो ग़म निकल जाए।
तुम्हारा नाम प्यारा लेते – लेते दम निकल जाए।।

जो मेरी जान लेने मौत आए साफ कह दूंगा।
नहीं मुमकिन गुरु दर्शन हुए बिन दम निकल जाए।

नहीं है इससे बढ़कर आरजू इस ''दास'' की मालिक।
गुरु के चरणों में सर हो, तो बस फिर दम निकल जाए।।

चाहता है बेचैन दिल देखूं तेरी तस्वीर को।
ऐ मेरे दाता बनां दे तूं मेरी तक़दीर को।।

है ये ख्वाहिश एहदे तिफ़ली से मुझे मेरे प्रभु।
हर घड़ी देखा करूं आँखों से अपने पीर को।।

रात – दिन जपता रहूं माला ही तेरे नाम की।
और कानों से सुनुं हर दम तेरी तक़रीर को।।

मैं भिखारी बन चुका हूं आप के ही द्वार का।
चाहे सवाब करो या उठा शमशीर को।।

"दास" कहता ही रहेगा वक़्त – ए – रफ़तन तक यही।
दर्स दिखलाना मुझे मेरे प्रभु आखीर को।।

निगाह – ए –नाज़ तेरी जिस पे भी इक बार हुई।
मौत भी सामने आई तो शर्मसार हुई।।

दीद तेरा ए मालिक जिसने इक बार किया।
तेरी पा ख़ाक को लेकर ही मुक़द्दर तैयार किया।।
कश्ती तूफ़ा में थी वो भी प्रभु पार हुई, निगाहे ... ...

काम जो मैंने किए बस हश्र को बर्बाद किया।
तेरे इक कर्म ने ही बस आक़बत को आबाद किया।।
मेरी हिम्मत तो सभी जान लो बेकार हुई, निगाहे ... ...

तेरी रहमत ने जो करिश्मा सा दिखाया।
रोज़ – ए– अव्वल से जो कदमों में सर को झुकाया।।
कश्ती मंझधार में थी जो वोह भी पार हुई, निगाहे ... ...

और तो और हुए मैं अपनी सुनानी है।
तेरी दातार मेरे इस "दास" ने देखी झलक नूरानी है।।
ज़िंदगी भर के लिए वो झलक तारनहार हुई, निगाहे ... ...

मिसले ख़्वाब है दुनिया फ़ख़ जिस पर तू करता है।
इसके ऐश– ो– ईशरत में वक़्त नाहक़ गुज़रता है।।

हज़ारों शहनशाह हुए जहां में खबर हो तुझको।
बजाए तख़्त के उनका पता गोरों से पड़ता है।।

यह नौचन्दी का मेला है न इसमें दिल लगा ग़ाफ़िल।
यह राहे गुज़र है इस पर तू काहे को पसरता है।।

ग़रज़ के हैं ये सब नाते न इनमें कोई है तेरा।।
जिन्हों की परवरिश ख़ातिर तूं लाखों कष्ट जरता है।।

प्रभु को याद कर हरदम सहाई अंत वोह होगा।।
पाप का बोझ "दासनदास" क्यों सर पर तू धरता है।।

प्रायः देखा जाता है कि बच्चों की शादियों के शुभावसर पर सेहरा व शिक्षा बोली जाती है। अब तो समय के अनुसार रस्मो–रिवाज बदल रहे हैं, पर पहले सेहरे व शिक्षा के रुप में लड़के लड़की को गृहस्थाश्रम को सुचारु रुप से चलाने के लिए उनके कर्तव्यों का बोध कराया जाता था। कई वर्ष पहले हजूर महाराज श्री ने यह सार शिक्षा बनाई थी जो अब भी प्रेमीजन बेटी को भेंट करते हैं।

श्री सद्गुरु देवाय नमः